ना॰ ३

दशदुमे॥ ५०० ॥ पारिभद्रेऽकपर्याचमस्रोमस्रोऽपिच। मस्र चमस्रगवचन्वारः पराययोजिति॥ ५ए९॥ तथावोहि विशेषे चमभेरो वसनानारे। मुष्कपन्थने।चापिमर्मरीपीनदार्गा॥ ५०२॥ मयू रः के कि व्याखीषधेऽपामार्गके किनाः। महें द्रोवास वेशे लेमञ्जरोति ल क दुमे॥ ५७३॥ वल्लयास्यूलम्नायामाठरोव्यास्विपयोः। स्र्यानुमे <u> इथमाजीरःस्थात्वद्वाराविडालयोः ॥ ५०५॥ मिहिरोऽर्के अनुदेबद्धेम</u>न रःकारकास्त्रयोः। लोकादिभेद नेचापिमुह्सिम्रईकामयोः॥ ५७५॥ मुदिरःकामुकेमेघेमुक्रोमक्रोयथा। कुलालदग्रहेचकुलेकारकाद्ध्यार पि॥ ५०६ ॥ मुर्मेगेम नाथेस्र यंत्रगेत्वपावने। क् धिरंद्स्योर ने र्धियेधरयोखने॥ ५०० ॥ वस्त्रांनुज्जमंजर्थाः क्षेत्रेऽनंभिष्णद्वे । वहनू रन्तु वनश्चेचेवा इना घरया रिपा। ५० पा मुक्तमं से का लमं सेवरवाव निकश्योः। वागरेवार केशा ग्रीनिन्येवा उववृक्ते॥ भएए।। मुमुक्षीप गिडतेचापिपरित्यक्त भयेऽपिच । वास्रेगगभेदेऽह्विवाद्रंद्ध मिजे जले॥ ६००॥ काक चिंच्यास्वीजेस्या दृष्टिग्गाव तेश द्वाख्याः। वा स्रावासिताराचोर्भविविष्टरआसने॥ ६०१॥ पादपेकुश्मुष्टीचिलारे संबविस्त ती। विद्यानागरेधीरेधृतगष्टानुजेऽपिच।। ६०२॥ विकासे विद्या ती से गेविचार स्तु जिना स्यो सी सायां समग्री स्व स्थेविद्य से युधिदार यो॥ ६०३॥ विदारोरोगभेदेस्यासालपर्योध्युद्धद्धाः। विध्रांस्य स्वि